THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180673
UNIVERSAL
LIBRARY

शुभ कामना

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82/V31Sh Accession No. G.H 1969

Author

Title 1955

This book should be returned on or before the date last marked below.

श्रम-देवता

(एकांकी नाटक)

केशवचन्द्र वर्मा

प्रकाशक तथा विक्रेता
लीडर प्रेस
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
वि० २०१३
मूल्य १।)

मुद्रक
प्रेमचन्द मेहरा
न्यू ईरा प्रेस, इलाहाबाद

श्रम-देवता के बारे में

कुछ भी कहना बेकार है।

देश में किसी भी राजनीतिक दल की सत्ता हो किन्तु श्रम का मूल्य बराबर बढ़ता ही जायगा। हम जिस आत्मनिर्भरता को खो बैठे हैं और जरा जरा सी चीजों के लिये भी दूसरों की सहायता की अपेक्षा रखते हैं, उस अपंगुता को हमें मिटाना होगा। वह साहस हममें तभी लौट सकता है जब हम अपने "श्रम-देवता" की सफलतापूर्वक पूजा करेंगे और उसके प्रति मन में सम्मान जगा सकेंगे। यदि इस ओर यह तनिक भी प्रेरणा दे सके, तो मैं नाटक को सफल मानूँगा।

एक शब्द इस नाटक की भाषा के बारे में भी कह दूँ। नाटक में सर्वत्र सरल खड़ी बोली का प्रयोग ग्रामीण पुट के साथ किया गया है। कहीं-कहीं पूरबी अवधी का भी प्रयोग है। यह सब कुछ इसीलिये कि ग्रामीण भाइयों को यह भाषा विदेशी न लगे। तत्सम शब्दों को तोड़ने-फोड़ने का अधिकार मैंने भली भाँति उठाया है, उसके लिये सुसंस्कृत पाठक से क्षमा चाहता हूँ।

५० ए०, टैगोर टाउन
इलाहाबाद
अगस्त २८, १९५५

—केशवचन्द्र वर्मा

पात्र-परिचय

१—राधाकिशुन : एक पढ़ा-लिखा नवयुवक जो अपने उद्योग से गाँव में एक नया आंदोलन चलाने में समर्थ होता है।

२—ठाकुर सोमनाथसिंह : गाँव के एक समृद्ध किसान जिनका पक्का मकान है। पुराने विचारों के भक्त-हृदय, परन्तु नवीन विचारधारा को अपनाने में समर्थ।

३—बड़हर बाबा : गाँव का एक ढोंगी पुजारी। ईश्वरीय कोप बताकर गाँववालों से पैसा ऐंठने-वाला व्यक्ति।

४—दलजीत : पुजारी का भक्त एक किसान जो पुजारी के षड्यंत्रों में भाग लेता है।

५—महँगू : एक नवयुवक किसान जो राधाकिशुन की सहायता करता है।

६—महेसरी : गाँव का एक अन्य किसान जो काफी लोकप्रिय है।

अतिरिक्त पात्र

रामअधार, रहीमू मियाँ, धनीराम, रामगोपाल, अयोध्यानाथ, सुमेरवा, पागल, एक औरत, कुँवर (एक छोटा लड़का) आदि।

स्थान

टोंस नदी के किनारे बसा एक पिछड़ा हुआ काल्पनिक गाँव।

नाटक की अवधि

एक घण्टा पच्चीस मिनट।

इस नाटक को कैसे खेलिए

कुछ सुझाव

नाटक में कहीं जटिलता नहीं है। फिर भी कुछ चीजों को समझ लेने से आपको खेलने में अधिक सुविधा होगी।

इस नाटक को खेलने के लिए आप कम से कम इतना बड़ा मंच बनाइये कि उसमें आगे से पीछे तक चार परदे लगाये जा सकें। एक परदा गहरे काले या नीले रङ्ग का हो जो सबसे अन्तिम परदा होगा। यह कभी भी हटाया नहीं जायगा। इसलिए इसको खींचकर बाँध दीजिये। उसके आगे का परदा सिर्फ चौथे और पाँचवें दृश्य में हटेगा। उसे ऐसा बाँधिये कि वह ऊपर न उठे बल्कि बीच से खुलकर दोनों ओर हट जाय! इससे मंच में पीछे के दृश्य का आभास मात्र मिलेगा और वह दर्शकों के लिए कुछ रहस्यात्मक बना रहने के कारण अच्छा लगेगा। सेतुबंधन और बाँध बनाने के दृश्य का आभास ही देना उचित होगा। पूरे सीन के रूप में उसे करना ठीक नहीं। उसके आगे परदा नम्बर तीन लगाइए। यह पर्दा तीसरे दृश्य में जहाँ पुजारी और बड़हर बाबा का स्थान दिखाया जाता है, वहाँ खुलना चाहिए। उसके बाद एक परदा बिल्कुल आगे होना चाहिए जो नाटक शुरू होने पर उठे और हर दृश्य के खुलने पर हटता रहे। इस परदे को कलात्मक ढङ्ग के चित्रों से, बेल-बूटों से—'श्रम-देवता' के नामांकन से सजा देना चाहिए। पहिले पर्दे और दूसरे पर्दे के बीच जगह काफी रखनी चाहिये।

दृश्य बनाने के लिए हर स्थल पर अलग-अलग संकेत दिये गये हैं। उन्हीं के अनुसार छोटे-छोटे दृश्य बना लेने चाहिए। बाँध की दीवार दफ़्ती रङ्ग कर बनाई जा सकती है। दूर से उसका आभास मिलता रहेगा। जङ्गल का दृश्य भी, पेड़-पत्ते और टहनियाँ काटकर बनाया जा सकेगा। पहिले दृश्य या चौथे दृश्य में हवेली की कल्पना पर्दे से भी दी जा सकती है।

रोशनी का प्रबंध भी अच्छा करना चाहिए। आगे की गैस-बत्तियां ऐसी हों जिनकी रोशनी कम ज्यादा की जा सके। यह काम उन बत्तियों के आगे रंगीन कागज लगाकर या दफ्ती में गोल छेद काटकर भी किया जा सकता है। पीछे के दृश्यों में ऊपर टाँगनेवाली बत्तियाँ नहीं बल्कि पखवई में रखनेवाली बत्तियाँ लगानी चाहिए जिन पर रंगीन कपड़े डाल-कर, रङ्गीन रोशनी दे देने से, वह दृश्य अपने आप आकर्षक एवं रहस्मय लगने लगेंगे। उससे नाटकीयता बढ़ जायगी। पीछे की रोशनियाँ जब जलें तो आगे की रोशनी मद्धिम कर देनी चाहिये। इससे दर्शकों की निगाहें पीछे के दृश्य पर केन्द्रित हो जायँगी।

वेशभूषा में अधिक परिश्रम की आवश्यकता न पड़ेगी। सभी पात्र साधारण किसान हैं। उन्हें चटक-मटक कपड़े नहीं पहनाने चाहिए। ठाकुर सोमनाथसिंह को कुछ अच्छे कपड़े भले ही पहिनाये जा सकते हैं। हर दृश्य में आनेवाले पात्रों के कपड़ों में यदि थोड़ा बहुत हर बार उलट-फेर कर दिया जाय तो उससे दर्शकों के लिए थोड़ी और रोचकता बढ़ाई जा सकेगी। दाढ़ी-मूँछों का प्रयोग भी कई किसानों की रूपसज्जा बनाने में किया जा सकता है, जैसे—धनीराम, रहीमू मियाँ, महेसरी और

बड़े ठाकुर आदि। सेतुबंधनवाले दृश्य में बन्दर भालू आदि की रूप-सज्जा चेहरे लगाकर बनाई जा सकती है।

इन बातों के अतिरिक्त जो सबसे आवश्यक है, वह यह कि हर पात्र को अपना पूरा पार्ट याद रखना पड़ेगा नहीं तो वह पूरे नाटक का क्रम बिगाड़ सकता है। दूसरी बात यह कि एक ऐसा व्यक्ति हो जो नाटक के हर अंश से भली भाँति परिचित हो, परदे कब उठेंगे, कौन से उठेंगे, कब गिरेंगे, कब कौन सी रोशनी तेज होगी या धीमी होगी, कब किस पात्र को मंच पर जाना है, आदि सभी बातों के लिए उसे ही उत्तरदायी होना चाहिए। नाटक में जिन-जिन चीजों की—मिट्टी के ढेर की, पत्थरों की और चारे की कुट्टी की, औजारों आदि की जरूरत हो, उन्हें पहिले से ही अच्छी तरह देखभाल कर इकट्ठा कर लेना चाहिए। भरसक हर सामान जुटाने की चेष्टा करनी चाहिए। उससे नाटक में रस बढ़ता है। यह सब इसी आदमी का काम होगा! उसे किसी भी हालत में नाटक में भाग नहीं लेना चाहिए। सफल नाटक करने के लिए ऐसे आदमी की बड़ी जरूरत होती है जो नाटक के सभी अंगों का परस्पर सहयोग कराता रहे। यह व्यक्ति यदि अपनी जिम्मेदारी ठीक ढङ्ग से समझेगा, तो नाटक कभी भी असफल नहीं हो सकता है।

पहला दृश्य

[परदा खुलता है तो एक पुरानी हवेली का अगला भाग दिखाई देता है। आगे काफी जगह पड़ी हुई है जिसमें बहुत से आदमी बैठे हुए हैं। कुछ बात-चीत कर रहे हैं। कुछ बैठे हुए बीड़ी या हुक्का पी रहे हैं। मंच पर एक किनारे एक गैस जल रही है जिस पर कुछ पतंगे मंडरा रहे हैं। चार तरुन पड़े हुए हैं। एक खाट भी बिछी हुई पड़ी है। एक तरफ एक आदमी हारमोनियम लिए बैठा है और कोई धुन बजा रहा है। एक हुड़ुक बजानेवाला उसी के साथ बैठा है। एक लड़का लड़की का स्वाँग बनाये हुए मंच पर आता है और भद्दे ढंग से मटक-मटक कर गाने लगता है। महेसरी और दलजीत आगे बैठे दिखाई पड़ते हैं। दलजीत अपने कुरते की जेब से तम्बाकू निकाल खैनी बनाकर बार-बार खाता है। महेसरी को भी देता है। लड़का नाच-नाच कर गा रहा है।]

(नाचते हुए गाता है)

मारे डारै कटीली तोर अँखियाँ।

ब्रह्मा बस कीन्हा बिश्नु बस कीन्हा

मुनि बस कीन्हा बजाइ के बँसिया ।
काम बस कीन्हा क्रोध बस कीन्हा
हरि बस कीन्हा लगाइ के छतिया !
गोपी बस कीन्हा ग्वाल बस कीन्हा
राधा बस कीन्हा डारि गल फँसिया !
मारे डारै कटीली तोर अँखियाँ !!—

(गानेवाला लड़का गाते गाते पीछे चला जाता है । रामअधार झाबा लिए हुए निकलता है ।)

महेसरी : अरे ! अधारे ! आखिर पत्तल पड़ने में अब कितनी देर है भाई ?

रामअधार : बस भइया ! थोड़ी देर और इंतिजार करो । अभी सब ठीक हुआ जाता है महेसरी दादा ! *(चला जाता है ।)*

दलजीत : अरे वाह महेसरी दादा ! आज तो बड़ी जल्दी पेट में चूहे कूदने लगे । अरे भाई ! जरा इंतिजार करो ! आज तो माल कटेगा ! जितनी देर नाई अस्तुरा पहँटता है उतनी ही सफाई से हजामत बनती है भइया ! सो जरा पहँटे जाव । *(महँगू का प्रवेश ।)*

महेसरी : *(हँसकर)* अरे हाँ हाँ ! मगर भाई अब तो काफी रात हो गई !····· आओ महँगू आओ बैठो ।

महँगू : *(बैठते हुए)* दादा, रोज रोज ये दिन कहाँ देखने को

मिलता है ? ठाकुर दादा के घर कितने दिन बाद तो लड़के की बोल सुनाई पड़ी। (*साँस खींचकर*) उसके लिए फिर क्या नहीं कर डाला बेचारे बड़े ठाकुर ने ?

दलजीत : अरे तो महँगू ! भगवान् सब की परीक्षा लेते हैं। मगर जो भगत होता है, उसको एक न एक दिन जरूर फल मिलता है। ठकुराइन को देखो कितना नेमधरम से रहती हैं। आठ-आठ दस-दस दिन तो उनके बरत उपवास में निकल जाते हैं। फिर बताओ कि आखिर भगवान् भी कब तक आँख बंद करके रहते ?

महेसरी : यही तो बात है भइया दलजीत ! ठाकुर के पिछले पुन्यों ने साथ दिया है नहीं तो किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि ठाकुर का खानदान अब आगे चलेगा। (*दलजीत फिर तम्बाकू खाता है।*)

महँगू : और अब देखो कि भगवान् ने आज यह दिन दिखाया कि उसी का मूँड़न हो रहा है !! (*दलजीत से तम्बाकू लेता हुआ*) परमात्मा चाहेगा तो यह लड़का भी ठाकुर का नाम उजागिर करेगा ! बड़े पुन्य की कमाई है ठाकुर की।

महेसरी : भाई, सच पूछो तो सब परताप है बड़हर बाबा का। जब से ठाकुर ने बड़हर बाबा की पूजा शुरू की तब से भइया ठाकुर के दिन फिर गये। ठाकुर का आँगन भी भर गया !

दलजीत : हाँ, मगर आज बड़हर बाबा नहीं आये।

महँगू : (*हँसकर*) अरे वे आकर अपना हिस्सा ले गये होंगे कि अभी तक बैठे ही रहेंगे ?

महेसरी : आयेंगे ! अभी तो कोई खास देरी नहीं हुई है उनके लिए। बारह बजे रात तक तो बाबा पूजा ही किया करते हैं, इसीलिए जब पूजा से उठेंगे तब कहीं यहाँ दिखाई पड़ेंगे !

महँगू : (*कुछ अविश्वास के साथ*) बाबाजी इतनी पूजा-पाठ करते हैं मगर आज तक सिद्ध नहीं हो पाये। प्रकृति का जब कोप होता है तो बस पूरे गाँव का सफाया हो जाता है। हर साल बरखा भर बड़हर बाबा को मनाते-मनाते ही गाँववालों का बीतता है मगर फिर भी वे कभी बचा तो पाये नहीं।

दलजीत : (*मुँह बनाकर*) हाँ यह तो है ! मगर पर साल तो बाबा की बड़ी किरपा रही।

महँगू : (*उठकर हाथ नचाते हुए*) हाँ, मगर त्योरुस साल क्या हुआ था ? घर गाँव, खेत, खलिहान, गाय-गोरू सब बह बिला गये थे कि नहीं ? बड़हर बाबा को कितनी पूजा चढ़ी थी, मगर कुछ नहीं हुआ। बाबा टोंस को रोक न सके ऐसा फाटक खुला कि हम सब उतराने लगे थे। क्यों दादा

महेसरी : अरे हमको खूब याद है महँगू ! सात दिन तक एक रूख पर टँगे रहे तब कहीं जाकर पानी घटा। दुइ मुट्ठी चना पर सात दिन कटाकट्ट चले गये। बैसी बहिया तो हमने देखा नहीं ! *(घबराकर सर पकड़ लेता है।)*

दलजीत : भाई जब बाबा नाराज हो गये तो फिर पूजा चढ़ाने से क्या फायदा ? पूजा तो तभी चढ़ाना चाहिए जब संकट आनेवाला हो। सङ्कट जब सिर पर आ गया तब फिर बाबा क्या कर सकते हैं ? फिर ये तो गाँववाले सनातन से जानते हैं कि जिस साल बाबा को पूजा नहीं मिली या उसमें कोई विघ्न हुआ, बस उसी साल गाँव में तबाही आई है ! तो भाई, इसका तो पहले ही से ध्यान कर लेना चाहिए !

(रामअधार फिर उधर से निकलता है।)

महेसरी : *(पुकारकर)* अरे भाई रामअधारे !

(रामअधार निकट आ जाता है।)

रामअधार : हाँ, दादा ! बस अब तैयार है। जरा पूड़ी गरम-गरम निकरै देव। बस हम सब इंतजाम करा रक्खे हैं।

महेसरी : अरे नहीं भाई। हम कहते हैं कि ये सब जल्सा हो रहा है मगर ठाकुर साहब कहाँ हैं ? मेहमान सब दरवाजे आये बैठे हैं, और खुद उन्हीं का पता नहीं।

रामअधार : (*हँसकर*) नहीं दादा। बस अब आते ही होंगे।

महेसरी : अरे। तो क्या घर में हैं नहीं ?

रामअधार : नहीं दादा। कुँअर जी का मूड़न वहीं बड़हर बाबा के थान पर हुआ है न! उसी के खातिर ठाकुर साहब गये हैं!

महँगू : क्यों भइया ? इतनी रात में मूँड़न ?

रामअधार : अब भइया ई सब तो जो बाबा जानें उन्हीं के कहे से बड़े ठाकुर कर रहे हैं। अभी आदमी आवा है। बताय रहा है कि अभी आइ रहे हैं। बाबा भी उन्हीं के साथ आवेंगे।

दलजीत : यह बात है!! (*उठकर एक थाली से पान निकालता है।*)

महँगू : रात में ? तो फिर पूजा भी चढ़ी होगी दलजीत !

महेसरी : वह देखो ठाकुर साहब ही तो शायद आ रहे हैं। लालटेन इधर ही तो आ रही है। (*हाथ उठाकर संकेत करता है।*)

रामअधार : हाँ हाँ मालिक ही तो हैं!!

(*लम्बे कद के ठाकुर सोमनाथसिंह का अपने तीन वर्षीय पुत्र कुंअरसिंह के साथ प्रवेश। साथ में त्रिपुंड लगाये, बदामी रेशमी दुशाला ओढ़े बाबा*

और आगे-आगे हाथ में डंडा और लालटेन लिए हुए एक नौकर ।)

(सब एक स्वर से खड़े होकर राम राम ठाकुर राम राम । जै राम ठाकुर !! जै शङ्कर बाबा ।)

ठाकुर : *(बड़ी विनम्रता के साथ)* अरे भाई राम राम !! बैठो बैठो सब लोग । क्यों अधारे ! खाना-पीना सब ठीक है ? *(कुंअरसिंह से)* बेटवा । सब के पाँय लागि आवा । *(कुँअर सब के पाँव छूने को आगे बढ़ता है ।)*

महेसरी : अरे हो गया, हो गया बेटा । ठीक है । बड़े होओ । बड़े ठाकुर का नाम उजागिर करो ।

(कुंअरसिंह महँगू की तरफ बढ़ता है ।)

महँगू : *(कुंअर को चपकाते हुए)* ठीक है बेटा ! जियो । मजे में रहो ! आनन्द करो !

(कुंअरसिंह फिर सब के पैर छूता हुआ घर के भीतर चला जाता है । पीछे लालटेन डंडा लिए नौकर भी चला जाता है । पुजारी खड़े-खड़े मूँछों पर ताव देते रहते हैं और क्रोधित नेत्रों से सब को देखते रहते हैं ।)

ठाकुर : अरे बाबा जी । आप तो तब से खड़े ही हैं । बैठिये । कहीं बैठिये । अधारे । आपको बैठाओ ।

रामअधार : (*हाथ से इशारा करके*) आइये पंडित जी। (*पुजारी जी पीछे-पीछे जाकर एक तख्त पर बैठ जाते हैं।*)

महेसरी : आपका बहुत-बहुत बधाई बड़े ठाकुर। (*हाथ जोड़ता।*)

महँगू : बड़े ठाकुर ! आपको भगवान् सदा बनाये रक्खें। (*हाथ जोड़ता है।*)

दलजीत : बाबा की किरपा आप सब पर, हम सब पर बराबर बनी रहे।

ठाकुर : (*झुककर जैसे आशीर्वाद स्वीकार करते हुए*) हाँ-हाँ भइया, बाबा की किरपा सब पर बनी रहे ! यह तो उन्हीं का दिया हुआ है। सारा गाँव ही उनका दिया है महेसरी ! जब तक बड़हर बाबा चाहते हैं तभी तक यह गाँव बना रहता है। उन्हीं की किरपा चाहिये।

बड़हरबाबा: (*दुशाला को लपेट कर हाथ में माला लेकर जपते हुए*) ओमनमः शिवाय ! लेकिन ठाकुर ! इस गाँव ने ऐसे कर्म नहीं किये हैं कि भगवान् इसे सदा के लिये सुरक्षित रक्खें। जब गाँववाले बड़हर बाबा की चिन्ता नहीं करते तो फिर बाबा ही क्यों गाँववालों की चिन्ता करते फिरें ?

महँगू : ऐसी क्यों कुभाखा बोलते हो बाबा ? पता नहीं किस बखत किसकी जीभ पर सुरसती मइया बैठी रहती है। उसी का कहा सच हो जाता है !

महेसरी : बाबा भला गाँववालों से क्यों नाराज़ होगे ? आखिर तो उन्हीं का दिया हुआ सब कुछ है ! मगर उनकी नाराज़ होने की कौन सी बात है ?

बाबा : *(उठकर आगे आते हुए मालावाला हाथ उठाकर)* नाराज होने की कोई बात ही नहीं है ? अरे जिसका दिया सब गाँववाले खाते हों, उसको उसकी पूजा तो दिया करो । तुम तो एहसान मानना भूल ही गए । अपनी भलाई करनेवाले का भी आदर-सत्कार करना नहीं जानते !

दलजीत : *(गंभीर मुँह बनाकर)* बात तो भइया, बाबा ठीक कहते हैं । आखिर जो भगवान् की इच्छा होती है वह बाबा के मन में आ जाती है, भगवान् सपना देते हैं बाबा जी को ।

रामअधार : *(सहसा पुकारते हुए)* अरे वाह ! धन्य हो मँझले ठाकुर ! इतनी रात में टेसन से चले आयो ? सरकार... मँझले ठाकुर आय रहे हैं ।.....*(इशारा करता है)*

[सब लोग उधर ही देखने लगते हैं । एक नवजवान हाथों में एक चमड़े का सूटकेस लिये सफेद कुर्ता, धोती और चप्पल पहिने हुए प्रवेश करता है । युवक की आँखों में एक अजीब सी चमचमाहट है । उसका माथा दमक रहा है । आते ही वह बड़े ठाकुर का पाँव छूता है ।]

ठाकुर : वाह राधाकिशुन ! आ गये भइया । हम तो समझे थे कि अब तुम नहीं आओगे । तुम्हारी भौजी तो आज दिन में दस बार तुम्हारा नाम लेकर याद कर चुकीं । बार-बार यही कहती रहीं कि कुँवर का मूँड़न हो गया और भइया नहीं आए !

राधाकिशुन: क्या कहूँ बड़े भइया, काम से छुट्टी ही नहीं मिली । पिछले दो महीने से आने-आने की सोच रहा था लेकिन आना हो ही नहीं पा रहा था ।

ठाकुर : (*हँस कर*) अरे भइया । तुमको ऐसी भी क्या छुट्टी नहीं मिल रही थी ? कोई नौकर-चाकर तो हो नहीं किसी के ! अपने मन के राजा हो ! खेती करते हो। चार आदमी तुम्हारे साथ काम करनेवाले हैं । जब चाहो तब चले आओ, चले जाओ !

राधाकिशुन: (*मुस्करा कर जवाब देते हुए*) नहीं बड़े भइया, और तो कोई बात नहीं थी, सिर्फ उधर, हमारी तरफ़, हम लोग एक बाँध बनवाने के चक्कर में थे । चाहते थे कि बरखा शुरू होने के पहिले ही वह बाँध तैयार हो जाय । नहीं तो बरखा के पानी से बड़ा नुकसान हो जाता था !

रामअधार : तो मँझले ठाकुर । बाँध पूरा भवा ?

राधाकिशुनः हाँ रामअधार ! पूरा हो गया । दो महीने की मेहनत में अब हमारी तरफ़ का पूरा इलाका पानी की मार से बच जायगा । पानी भी सिंचाई के लिए अलग एकट्ठा हो जाया करेगा !

दलजीत : हाँ मँझले ठाकुर । अपनी तरफ से तो इन्सान कुछ बाकी नहीं रखता, मगर फिर परमात्मा जैसा करे। हमारा गाँव भी जब तक बड़हर बाबा की किरपा रहती है तब तक ठीक रहता है ।.....

महँगू : *(बात काटता हुआ)* मगर जैसे ही उनकी पूजा कम हुई कि उस साल बस बरखा में गाँव की तबाही आ जाती है मँझले ठाकुर !

महेसरी : पूजा में कोई अगर विघ्न भी पड़ गया तब भी किशुन भइया ! बाबा नाराज हो जाते हैं ।

राधाकिशुनः *(आश्चर्य से)* अच्छा ? ये बड़हर बाबा हैं कौन ?

दलजीत : *(सहसा बोलते हुए)* बड़हर बाबा इस गाँव के रक्षक हैं मँझले ठाकुर ! उन्हीं की महिमा है कि आज बड़े ठाकुर की हवेली खड़ी है । यह उन्हीं का परताप है कि बड़े ठाकुर का कुल चला और आज उन्होंने उसके मूँड़न का दिन दिखाया । *(बाबा जो अब तक आँख बन्द किये बैठे थे मुस्कराकर ।बोल पड़ते हैं—ओम नमः शिवाय !)*

राधाकिशुन : अच्छा ?·····पाँइ लागी बाबा। हमरे ऊपर कृपा बनाये रह्यो।

दलजीत : हाँ मँझले ठाकुर···अब आपसे छिपा थोड़ै है ? बड़हर बाबा से कुसल पूछने के लिए तो पचास-पचास कोस से आदमी आता है ! जिसको बड़हर बाबा ने अपनाया उसकी कामना ज़रूर पूरी होती है भइया !

राधाकिशुन : मगर फिर बाबा नाराज़ क्यों हो जाते हैं ?

दलजीत : अरे जब उनका सत्कार लोग नहीं करते तो क्या करें ? आखिर नाराज होकर फिर सारे गाँव को बहा देते हैं !

महँगू : *(व्यंग से)* हाँ भइया जिनकी पक्की कोठी है, उनको कुछ नहीं होता। मगर जिनका छानी छप्पर नहीं रह जाता उनको तो कोई पूछनेवाला भी नहीं होता !

राधाकिशुन : *(अचरज से)* बड़े भइया। यह लोग क्या कह रहे हैं ?

बाबा : *(कुछ जोर से)* हाँ-हाँ ठीक कह रहे हैं। आखिर, बाबू, जो देवता प्रसन्न हो सकते हैं वह अप्रसन्न भी तो हो जाते हैं। इंद्र भगवान् को भैरव बाबा हुकुम दे देते हैं। जैसा हुकुम इन्द्र भगवान पाते हैं, वैसा ही काम वह करते हैं। इसमें कोई फिरंगी विद्या नहीं चल पाती है मँझले ठाकुर !

राधाकिशुन : नहीं भइया यह सब फजूल की बकवास है।

बाबा : बकवास है ? क्या कहते हो मँझले भइया ? हमने बताया तो कि भगवान् भोलानाथ सब की रक्षा करते हैं मगर आप लोग तो जूठी विद्या पढ़कर सब कुछ भूल गये हैं। आपके देवी-देवता सब को फिरंगी विद्या ने हटा दिया।

(राधाकिशुन कुछ हँसता है।)

दलजीत : मँझले ठाकुर.....ऐसा नहीं कहे चाही। *(समझाने की मुद्रा करता है।)*

राधाकिशुन: *(कुछ तैश में)* क्या नहीं कहना चाहिये ? अरे ! तुम लोग इतने बड़े गाँव में रहते हो और-फिर भी अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकते हो ? भइया, इससे बढ़कर और शर्म की दूसरी क्या बात होगी कि तुम अपनी रक्षा के लिये किसी दूसरे का मुँह देखो ?

बाबा : *(मालावाला हाथ उठाकर)* मँझले ठाकुर ! *(दुशाला फिर लपेटता है।)* आप समझते नहीं हैं कि आप किसका अपमान कर रहे हैं ! इससे बड़ा अनर्थ हो सकता है।

महेसरी : *(बीच-बचाव करते हुए)* अरे बाबा ! मँझले ठाकुर नई रोशनी के आदमी हैं। इनका कहना-सुनना वाजिब ही है। मगर उससे आपको नाराज़ नहीं होना चाहिये। यह अभी आपके मंत्रों के बल को नहीं जानते।

महँगू : मगर महेसरी दादा ! पढ़े लिखे आदमी की बात ध्यान से सुननी चाहिये ! उसको ऊँच-नीच कहने से क्या फायदा ?

दलजीत : मगर क्या पढ़-लिखकर मँझले ठाकुर आपने अपने साधू-सन्तों में भी विश्वास खो दिया ?

राधाकिशुन: साधू सन्तों से विश्वास खोने न खोने का सवाल ही नहीं उठता। दलजीत ! शायद मैं तो तुम सबसे बढ़कर भगवान् तथा उनके भक्तों की पूजा करने को तैयार हूँ। मगर मेरी भावना मुझे बराबर यही समझाती है कि भगवान् सब का मंगल ही करते हैं। जो ऐसा नहीं मानते उन्हें मैं नास्तिक मानता हूँ। भगवान् ने स्वयं गीता में कहा है कि कर्म करो.....

ठाकुर : अच्छा भइया होगा। जाने दो...आते ही आते तुम कहाँ से बहस में उलझ पड़े ? चलो भीतर तुम्हारी भौजी तुम्हारा इंतिजार कर रही होगी भइया। *(हाथ से पीठ ठोंकता हुआ भीतर चलने को कहता है।)* कुछ खाओ पियो। फिर बहस करना !!

[सहसा एक अर्ध विक्षिप्त सा, फटे गूदड़ लपेटे, माथे पर गोल टीका लगाये, गले में माला पहिने हाथ में नारियल का गोला और एक रंगीन कपड़ा लिये हुए एक व्यक्ति "ही ही ही ही" हँसता हुआ

आता है। सब घबड़ा उठते हैं। 'अरे ! अरे !! की चीख]

पागल : *(भयानक ढंग से हँसते हुए)* हा हा हा हा···ही ही ही ही ही···क्या कहा है कर्म करो·····? *(नारियल का गोला उठा लाता है)* मूरखराम ! किसने···?

दलजीत . *(चीखकर)* अरे राम ! पगलू ने तो बाबा की सारी पूजा का सामान उठा लिया।

(नाचनेवाला लड़का रुक जाता है। गाना बंद हो जाता है।)

ठाकुर : *(घबड़ाए हुए)* अरे पगलू। यह सब सामान तो पूजा पर चढ़ा हुआ था ! बाबा के थान से तू इसे क्यों उठा लाया?

पागल : *(हँसते हुए)* क्यों उठा लाया ?...हमारा मन···! ठाकुर ! *(नारियल का गोला उछाल कर जमीन पर गिराता है। गोला फूट जाता है।)* ऐसे ही एक दिन सबका सिर बड़हर फोड़ेगा। तब ठीक होगा !! *(हँसता है।)* क्यों ठाकुर ?

महेसरी : *(इधर-उधर घबड़ाकर देखता हुआ)* बड़ा गजब हुआ बड़े ठाकुर ! भैरव बाबा की पूरी पूजा सब पगले ने सत्यानास कर दी !

पागल : *(बिगड़कर)* किस साले ने पूजा की थी ?···नारियल···

रामअधार : *(क्रोध में लपककर पगल को मारता हुआ)* अबे !

सारा गाँव सत्यानास कर डालेगा और उस पर से यहाँ आकर गाली बकता है...मारते-मारते हड्डी पसली चूर कर दूँगा। *(पगले को पटक देता है।)*

राधाकिशुन: *(खड़ा होकर हुड़दते हुए)* रहने दो रामअधार। उसे मत मारो। जाने दो! जो आदमी पागल है...उसे मारने मे क्या लाभ है। *(रामअधार को अलग कर देता है। पागल उठकर बड़बड़ाता है।)*

बाबा : *(गहरी साँस खींचकर)* जो कुछ भी हुआ, यह अच्छा नहीं हुआ है ठाकुर!...हमारे भोग में विघ्न पड़ा है। अबकी गाँव पर भैरव की कृपा नहीं है।...*(श्वास छोड़कर)* जय महाभैरव...।

ठाकुर : *(घबड़ाकर)* बाबा जी! पगले ने अनर्थ कर दिया। अब रक्षा करो। हम सब तो आपके सामने मुँह भी नहीं खोल सकते। *(हाथ जोड़ते हैं।)*

[दलजीत, महेसरी, महँगू, रामअधार सभी हाथ जोड़ते हैं। बाकी बैठे हुए लोग भी उठ कर खड़े हो जाते हैं। बाबा जाने लगते हैं।]

बाबा : देखूँ कोई उपाय गाँव के कल्याण का निकलता है या नहीं? भोजन न भिजवाना ठाकुर। मैं इस वक्त नहीं खाऊँगा। *(जाता है।)*

महँगू : बड़ा गजब कर दिया पगले तूने ! (*सब इधर-उधर उठने लगते हैं। शोरगुल मचता है। पागल को पकड़कर ले जाते हैं। पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।*)

———

दूसरा दृश्य

[पर्दा उठता है। महेसरी के घर का अगला भाग। एक टुटही चारपाई पर महेसरी बैठा हुआ हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। पास ही एक आदमी बैठा हुआ चारे के लिए कुट्टी काट रहा है।)

महेसरी : *(हुक्के का कश खींचकर)* अरे भलेमानुस! जरा महीन महीन काट! इतनी मोटी कुट्टी तो तू भी नहीं दाँत से काट पायेगा, जानवर क्या काटेगा? *(खाँसता है।)*

(कुट्टी काटनेवाला तेजी से पतली और महीन कुट्टी काटने लगता है।)

महेसरी : (देखकर) हाँ ऐसे काट! भइया काम जब तक मन लगा कर न करोगे तब तक इस दुनियाँ में गुजारा होना मुश्किल हो जायगा। अरे!.....आओ भइया दलजीत!...कहाँ से इतनी बखत?

(दलजीत का प्रवेश)

दलजीत : राम राम महेसरी दादा !... सुना कुछ तुमने ?...

महेसरी : (*चारपाई पर बैठने का संकेत करता हुआ*) नहीं तो क्या हुआ ?

दलजीत : अरे वही पगलू ने जब से पूजा का सामान उठा लिया तब से गाँव में तबाही आने के लच्छन शुरू हो गये हैं और क्या ? बिपत मँड़रा रही है दादा ! (*एक ओर बैठ जाता है।*)

महेसरी : बात ई है भइया दलजीत, कि हम तो इधर पाँच दिन से घर से बाहर निकल ही नहीं पाये। जूड़ी बुखार में परेशान थे।

दलजीत : अच्छा ? महेसरी दादा ! तुमको भी जूड़ी-बुखार आ गया ? गाँव में आजकल चारों तरफ यही बुखार फैल गया है। भैरव बाबा का कोप है। जल्दी ही आदमी का अच्छा होना बड़ा मुश्किल है। जानते हो, पासियों के पुरवा में जो जगेसरा था न, वह इसी में चल बसा ! सक्कर के लड़के को भी बड़ा तेज जर चढ़ा था पता नहीं बचा कि नहीं ?

महसरी : दलजीत भइया, बचते तो हम भी नहीं। लेकिन मँझले ठाकुर ने कोई ऐसी टिकिया दे दी कि फिर जूड़ी-बुखार तीन दिन से तो पास नहीं फटका !

दलजीत : *(गम्भीर मुद्रा में समझाते हुए)* महेसरी दादा ! मँझले ठाकुर बड़ा बुरा कर रहे हैं। कई और लोगों को भी उन्होंने यही टिकिया-फिकिया बाँटी है। साधू-सन्तों देवी देवता से झगड़ा करके हम लोग जिन्दा नहीं रह सकते ! आखिर उन्हीं की कृपा से तो यह गाँव बना बसा है।

महेसरी : हूँ..... हूँ.....यह तो है ही !! *(हुक्का पीता जाता है।)*

दलजीत : *(हिम्मत पाकर)* तो फिर बताओ दादा ! कि मँझले ठाकुर आखिर जब यहाँ से चले जायँगे तब फिर यह सब कौन भोगेगा ? हमीं लोग न ? कि कोई दूसरा आयेगा, हमारी मुसीबत बँटाने ?

महेसरी : मगर भइया टिकिया से फायदा तो हो गया। ई बात तो जरूर हम कहेंगे !

दलजीत : अरे दादा ! ई सब बीमारी आजारी टिकिया फिकिया से जाती होती तो फिर अंग्रेजी डाक्टर सारी दुनियाँ से बीमारी ही हटा न देते ? दादा ! ई सब तो कर्मों का फल है। करमफल को तो परमात्मा हटा सकते हैं। दवाई बेचारी का करेगी ?

महेसरी : *(कुछ हिचक के साथ हुँकारी भरते हुए)* हाँ, यह तो है दलजीत ! मगर भइया .....

दलजीत : (*महेसरी के हाथ से हुक्का अपने हाथ में लेकर एक कश लगाते हुए*) दादा ! बात तो ई है कि जब तक दवाई इलाज करो तब तक बड़हरी बाबा कुछ नहीं बोलते ! कहते हैं कि जब भाई अपने इलाज से अच्छे हो सकते तो अच्छे हो जाओ ! हम क्यों बोलें ? मगर वही दवाई से अच्छा होना था तो आखिर जगेसरा क्यों नहीं बच गया ? (*समझाते हुए*) फिर दादा ! इस तरह की दवाई इलाज से तो बाबा और नाराज़ होते हैं !

महेसरी : भइया दलजीत ! मरना-जीना तो खैर भगवान् के हाथ में है। जिसको चाहें जिलायें, जिसको चाहें मारें। आखिर खटिया पर पड़े-पड़े आदमी की धुकधुकी बन्द हो जाती है तो कोइ क्या कर लेता है ? मगर जो कहो कि इस जर को मारने में, तो इस मँझले ठाकुर की दवाई ने बड़ा फायदा किया है दलजीत ! ई देखो कि यही सुमेरवा को चार दिन से बुखार आ रहा था, वही टिकिया हमारे पास रही सो इसको दे दिया। बस जर फिर न झाँका ! कबे सुमेरवा ?

सुमेरवा : (*कुट्टी काटते हुए*) हाँ-हाँ भइया ! देंह बहुत टूटत रही ! मुला गोली गुन तौ बहुत किहिस !

दलजीत : (*कुछ झेंप कर*) हाँ-हाँ हुआ होगा। अब यह हम थोड़े ही कह रहे हैं कि उससे कभी फायदा हो ही नहीं सकता।

मगर होता वही है जो कि परमात्मा चाहता है।.....
(दूर देखते हुए) महंगुवा आ रहा है क्या ?

(सहसा घबड़ाये हुए महँगू का प्रवेश)

महेसरी : आओ भइया महँगू !.....इतने घबड़ाये हुए क्यों हो ? घर में तो सब खैरियत है ?.....बैठो न.....(बैठने *का संकेत करता है।)*

महँगू : महेसरी दादा, तीन दिन से तो जूड़ा आ रही थी ! कहो कि मँझले ठाकुर ने जहर भरी एक टिकिया खिला दी तो जर टूट गया !.....मगर दादा.....अब दूसरी मुसीबत आ पड़ी है।

दलजीत : क्या हुआ भइया। बैठो न ! आखिर तुम्हारी मुसीबत सब की मुसीबत है न !.....क्या बात है ?

महँगू : (*गहरी साँस लेकर*) बैठने से काम न चलेगा दलजीत। पगलुवा ने गहरी मुसीबत खड़ी करने का इन्तिजाम पूरा कर दिया है। अब की गाँव की खैर नहीं नजर आती !

महेसरी : अरे यही जूड़ी बुखार न ? चार दिन में ठीक हो जायगा। मँझले ठाकुर की टिकिया बनी रहे, देखो कुछ चिन्ता करै की बात नहीं है !

महँगू : दादा ! ई जूड़ी-बुखार तो उस बड़े जूड़ी-बुखार के सामने कुछ नहीं है ?...टोंस नदी फिर बढ़ रही है।

(महेसरी और दलजीत चौंककर खड़े हो जाते हैं।)

महेसरी : हाँऽऽऽऽ ? कैसे मालूम ?

महँगू : कैसे क्या मालूम दादा ? अपनी आँखों देखे चला आ रहा हूँ। हमारा जड़हनवाला खेत तो उधर ही है। छन्नू पंडित के खेत में पानी छू रहा है।

दलजीत : बस तो इसके माने यह है कि अगर चार दिन पानी और बढ़ा तो फिर सारे गाँव का कल्यान नहीं है। सब घर खेती-बारी बूड़ जायगा।

महेसरी : मगर पानी इधर आया कैसे ? तब की दफे तो पानी का कटाव ऐसा काट दिया था कि इधर का पानी नाले में चला जाता था !

महँगू : हाँ दादा ! मगर नाले की तरफ पानी नहीं निकलता ! कुल पानी गाँव की तरफ ही जब बहने लगता है तो फिर बहिया आ जाती है।

महेसरी : *(कुछ तैश में)* वही तो पूछ रहा हूँ कि आखिर पानी इधर कैसे आएगा ?

दलजीत : दादा ! महँगू की बात समझे नहीं ? पानी जब उधर नहीं जायगा तो इधर आएगा। इसमें तो समझनेवाली कोई बात ही नहीं है।

महेसरी : तो पानी इधर क्यों आने देते हो ? उधर ही क्यों नहीं निकाल देते हो ?

दलजीत : वह इनके निकाले निकलेगा ? वह तो भैरव बाबा की ही कृपा होगी तो निकलेगा। आखिर मैं जो कह रहा था वह क्या था महेसरी दादा ? बहुत सी चीजें ऐसी होती हैं जो साधारण आदमी के बस की नहीं होतीं। (*जेब से तम्बाकू की थैली निकालकर तम्बाकू खाता है।*)

महँगू : (*नाराजी के स्वरों में*) बस की क्यों नहीं होती भइया ? सवाल तो यह है कि उन्हें बस में कैसे किया जाय ?

दलजीत : (*व्यंग से*) तो कर लो ना बस में ? देखो। बढ़ तो रही हैं टोंस महरानी ! जिस माई के लाल में दम हो, वह आगे क्यों नहीं आता ?

महँगू : (*ताव में*) इतना बड़ा काम करने के लिए अकेले का दम नहीं चाहिए ! नदी से झगड़ा ठानना, अकेले बूते का काम होता तो यह महँगू कभी पीछे न पड़ता। समझे दलजीत !

महेसरी : अरे बहस बंद करो ! अब बताओ होगा क्या ?

दलजीत : होगा क्या ? बड़हर बाबा को मनाओ। उसके अलावा हमारे पास चारा भी क्या ? (*उठते हुए*) अच्छा हम तो चलते हैं दादा, जरा अपना भी खेत देख आवें...पता नहीं क्या दुरदसा हो ?

महेसरी : हाँ-हाँ जरूर। अच्छा भइया राम-राम.. *(दलजीत जाता है।)* सुनो महँगू.....कम से कम यह बात मँझले ठाकुर से भी कहनी चाहिए। हो सकता है कि कोई तरकीब निकल आवे.....।

महँगू : मगर दादा। बड़े ठाकुर के यहाँ अकेले जाने की मेरी हिम्मत नहीं है। बड़े ठाकुर भी तो भगत हैं। वह तो समझेंगे कि हम कोई ऐसा काम करने आए हैं जिससे बड़हर बाबा के सम्मान को नुकसान पहुँचेगा।

महेसरी : नहीं महँगू। बड़े ठाकुर को तो गाँव के हित का भी ध्यान करना ही होगा। ऐसा वह भला क्यों सोचेंगे? *(हुक्का पीता है।)*

महँगू : तो दादा। तुम भी चलो।.....तुम्हारी बात मँझले ठाकुर भी सुनेंगे।

महेसरी : *(कुछ सोचकर)* अच्छी बात है।.....चलो मैं भी चलता हूँ। *(हुक्का जमीन पर एक किनारे रख देता है।)* सुमेरवा! देखे रहना। कहीं जाना नहीं। कुट्टी जरा महीन-महीन काटना। मैं अभी ठाकुर के यहाँ से होकर आता हूँ।

सुमेरवा : अच्छा दादा!!

(महँगू और महेसरी चले जाते हैं। सुमेरवा कुट्टी काटकर एक ओर सहेजता है। परदा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

[पर्दा धीरे-धीरे उठता है। एक जंगल का सा दृश्य। चारों तरफ झाड़ियाँ और पेड़ हैं। उसी में एक ओर एक पेड़ के नीचे एक छोटी सी झोपड़ी है। झोपड़ी पर एक लाल झंडी फहरा रही है। झोपड़ी के अंदर जाने के लिए एक छोटा सा दरवाजा है। सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। वहीं दीवट पर रक्खा हुआ एक दीपक जल रहा है। सामने ही एक छोटा सा घंटा भी टँगा है। सहसा एक औरत का प्रवेश। घबड़ाई हुई सी आकर बैठ जाती है।]

औरत : *(आर्त स्वर में)* हे बड़हर बाबा, हमरे लड़िका का बचाय लेव.....हे बाबा, हम तुम्हका दूध और अंचरा चढ़ाउब !!...*(मत्था टेकती है।)* हे बाबा, हमरे और कौनौ नाहीं है जे हमार घर उजेर करे। हे बाबा..... *(फिर मत्था टेकती है।)*

(एक ओर से बाबा का प्रवेश)

बाबा : *(गम्भीर स्वर में)* कौन है ? *(पहिचान कर)* चम्पिया ? क्या है। क्यों इस वक्त आई है ?

औरत : बाबा हमार रच्छा करौ। गिरधारी का पंद्रह दिन से जूड़ी-बुखार धरे है।...बचै कै आस नाहीं रहिगे है।... हमार घर बचाय देव बाबा...(*फिर मत्था टेकती है।*)

बाबा : (*व्यंग से*) हमारे पास क्या धरा है? जाओ जाकर मँझले ठाकुर से टिकिया लेकर फाँको न! सारा गाँव टिकिया फाँक-फाँक कर अच्छा हो रहा है तो तुम्हे ही यहाँ आने की क्या जरूरत पड़ी?

औरत : नाहीं बाबा! हमका बाबा का छोड़ और कौनौ पै बिस्वास नाहीं है। हमार रच्छा करौ बाबा! (*मत्था टेकती है।*)

बाबा : (*गम्भीर स्वर में समझाते हुए*) देख! ये जूड़ी-बुखार उखार नहीं है! ये साच्छात् भैरव महाकाल इस गाँव पर उतर आए हैं। अभी क्या? अभी देखना कि कितने इसमें मरेंगे। भैरव के अपमान का फल!

औरत : महराज गिरधारी के परान बचाय देव। नाहीं तौ हमका...कौनौ आसरा न रहि जाए। (*रोती है।*)

बाबा : (*कुछ सोचकर*) देख चम्पा! बनवारी मेरा बड़ा भगत था। बेचारा कच्ची उमर में मर गया। उसी का मुझे ख्याल है।...गिरधारी को बचा दूँगा मगर तुझे महाकाल का पाठ कराना होगा! (*'महाकाल' पर जोर देता है।*)

औरत : बाबा जैसे चाहो वैसे बचाओ !

बाबा : उसमें तीस-पैंतीस का खरच बैठेगा । बोलो मंजूर है ?

औरत : (*निराश होकर रोते हुए*) बाबा ! भला मेरे पास कहाँ इतना पैसा धरा है ?

बाबा : पैसा नहीं है तो.....ये.....(*कुछ कोमल स्वरों में*) गले में चाँदी की हँसुली तो है ।...इसे ही दे डाल !

औरत : लेकिन.....लेकिन .....ई हँसुली तो उनके खरीदी है.....।

बाबा : (*लोलुप दृष्टि से समझाते हुए*) अरे उनकी खरीदी हुई है तो लड़का भी तो उन्हीं का है जिसको तू बचाने के लिए इसे दे रही है ! आदमी लड़के के लिए क्या नहीं करता ? गिरधारी जिन्दा रहेगा तो तेरे लिए दस हँसुली तैयार हो जायगी । (*दाँव खेलता हुआ*) वैसे तेरी मर्जी ।...मुझे क्या करना है ! (*पीठ फेर लेता है ।*)

औरत : (*हँसुली का मोह करती हुई*) महराज ! और कोई उपाय नहीं है ।

बाबा : (*व्यंग से मुड़कर*) है क्यों नहीं ? मँझले ठाकुर सब को गोली बाँट रहे हैं । जा तू भी ले ले । बेकार मेरी गर्दन दबाए है । मेरे पास तो दुआ है, दवा तो है नहीं । (*जाने लगता है ।*)

औरत : (*पुकार कर*) महराज ! ऐसा न करो ।... (*हँसुली*

उतारती हुई) लेव ! हँसुली के हमका मोह नाहीं है मगर हमार गिरधारी बचाय देव ।

बाबा : *(लौटकर)* देख चम्पा ! अच्छी तरह सोच-समझ ले ।

[दलजीत का एक ओर से प्रवेश]

दलजीत : जै शङ्कर ! जै बड़हर बाबा !!

पुजारी : आओ दलजीत भगत ! .....कहो .....गाँव का हाल-चाल ठीक है ?

दलजीत : *(हाथ उठाकर जैसे चम्पा को सुनाते हुए)* अरे बाबा बड़ा अंधेर मचा है !... सब घर में आदमी जर में पड़ा है । पासी पुरवा का जगेसरा, इस पुरवा का मातादीन सब इसी जर में सरगधाम चले गये । . मातादीन को तो अभी फूँक के आ रहे हैं !! आप रच्छा करें तो करें, नहीं तो गाँव तो गया । *(औरत मत्था बार-बार टेकती है ।)*

बाबा : क्यों ? मँझले ठाकुर की टिकिया ने तो सुनते हैं बहुत लोगों को अच्छा कर दिया । अब बेचारे बड़हर बाबा क्या करेंगे ?

दलजीत : अरे ऐसा न कहो बाबा ! .. तुहार कृपा से तो ये गाँव चलता रहा है । उसी से जिन्दा रहा है । जब तुम्हीं ऐसा कहोगे तो गाँव रसातल को चला जायगा । ..

उधर सुनते हैं कि नदी का पानी भी बढ़ रहा है। और थोड़ा पानी गिरा कि बस गाँव को नदी समेट लेगी।

बाबा : (*व्यंग से हँसता हुआ।*) मँझले ठाकुर से कहो ! हम क्या कर सकते हैं ?...(*औरत से*) हाँ तो चम्पा। देख सुन ले। हँसुली देने के पहले सोच ले...बाबा तो इधर बैठकर महाकाल पढ़ें और तू सारे गाँव में उधर गाती फिरे कि बाबा ने मुझसे हँसुली छीन ली है। ऐसा न हो !!

औरत : (*आर्त स्वर में*) अरे बाबा ! हमारी रच्छा करो। गिरधारी के संघे-संघे हमहूँ चली जाब...हम ना रहबै . । (*हँसुली हाथ में लेता हुआ*) अच्छा लाओ हँसुली इधर लाओ।

बाबा : मैं महाकाल पाठ कर दूँगा। तू निसचिंत होकर घर जा। बड़हर बाबा चाहेंगे तो कल तेरा गिरधारी हँसकर उठ बैठेगा।...(*अन्दर जाकर एक पत्ते पर भभूत ले आता है।*) ले इसे ले जा। आज खिला देना और माथे पर लगा देना। (*हँसकर दलजीत की तरफ देखते हुए और औरत को सुनाकर*) मंत्र-तंत्र में जो ताकत है, वह सौ जनम किसी दवाई में नहीं आ सकती है। जा घर जा...अब फिकिर मत कर... (*औरत फिर बार-बार मत्था टेकती है।*)

औरत : बाबा। रच्छा किह्यौ। सब कुछ तुम्हरे उप्पर है। महराज। हमार गिरधारी कै परान तुम्हरेन हाथन मा है।

दलजीत : (*कुछ घुड़ककर*) अरे जा...जब बाबा ने कह दिया तो क्यों नहीं निसचिंत हो के जाती ! विश्वास कर। जा... अपने घर जा।

(*औरत जाते जाते एक बार फिर माथा टेककर तब जाती है।*)

बाबा : (*खुद एक आसन डालकर बैठते हुए*) हाँ दलजीत भगत। कहो।...क्या हाल है तुम्हारे मँझले ठाकुर के ? सुनते हैं कि वह तो डाक्टरी कर रहे हैं ?

दलजीत : (*सकपका कर चारों ओर देखता हुआ कुछ धीमे स्वरों मे*) बाबा ! बड़ी अचरज की बात है। मँझले ठाकुर की टिकिया से पचासों आदमी अच्छे हो रहे हैं ! सब उन्हीं का गुन गाते हैं। ये तो कुल जमा कह दो आदमी मरे, नहीं तो महराज ! पचासों की लहास उठी होती !!

बाबा : (*भ्रकुटी चढ़ाकर*) अच्छा ?...वह...(*घृणा से*) वह गोली फायदा भी करती है !!

दलजीत : हाँ बाबा। (*गहरी साँस खींचकर*) अब तो एकदम कलजुग आने ही वाला है।.....

बाबा : (*सोच में पड़कर*) तभी यहाँ कोई नहीं आता। मेरा स्थान सूना पड़ा रहता है !...

दलजीत : तो कौन आये बाबा। आखिर जब सब को वहीं फायदा हो जाता है तो मुफती दवा छोड़कर यहाँ कौन पूजा चढ़ाने आवे ?

पुजारी : (*मूँछें ऐंठता हुआ*)...हाँ...लेकिन...मैं यह हालत नहीं चलने दूँगा। मँझले ठाकुर को यह गाँव छोड़कर जाना होगा। हम इसको कभी भी क्षमा नहीं करेंगे। (*माला निकालकर जपता है।*)

दलजीत : (*हाँ में हाँ मिलाता हुआ*) हाँ ये बात तो है ! मँझले ठाकुर चले जायँ तो फिर इस गाँव में और कौन है जिसके सहारे लोग रहेंगे ? अरे खुद बड़े ठाकुर जब आप के भगत हैं तो फिर सारा गाँव और कहाँ जायगा।... मगर सुनते हैं कि मँझले ठाकुर तो अभी कुछ दिन रहेंगे !

बाबा : (*जपना बन्द करके*) नहीं दलजीत भगत ! ..(*षड्यन्त्र करने की मुद्रा में*) मसानी भैरव का हुकुम हुआ है कि तुम्हें एक काम करना होगा। (*चुटकी बजाकर तर्जनी ऊपर उठाता है।*)

दलजीत : जो कहें बाबा ! हम तो सदा तैयार हैं।

पुजारी : (*जरा गम्भीर और धीमे स्वर में*) तो सुनो...तुम्हें

मँझले ठाकुर के घर में घुसकर उनका दवा का पूरा बक्सा उठा लाना है !!...समझे !...कानों कान...किसी को खबर न हो... ।

दलजीत : मगर बड़े ठाकुर के घर में घुसना होगा ? (*हिचकता है ।*)

पुजारी : ठहरो । (*भीतर जाकर फिर भभूत लाता है और उसे एक कपड़े में बाँधकर देता है ।*) यह ले । हाथ में बाँध ले । भैरव बाबा हर जगह पर तेरी रक्षा करेंगे ।..... बड़े ठाकुर के घर में घुसकर ही बक्सा उठा लाना होगा !

दलजीत : मगर.....! अगर कहीं महँगू या रामअधार को पता चल गया तो वह हमारी जान ले लेंगे बाबा.....

पुजारी : दलजीत भगत ! जब तक हम जिन्दा हैं, तुम्हारी जान कौन ले सकता है ? (*मुँह बनाकर*) और यह महँगू ? इसको भी मँझले ठाकुर ने अपना चेला बनाया है ?..... अच्छा ठहर !!.....(*पीछे जाकर एक बार उचक कर देखता है । फिर धीरे-धीरे लौटकर आता है ।*) देख.....!! वह.....जो नाले के कटाव पर बंधी है न ! उसे काट देना ! (*आज्ञा देते हुए*) रातों रात । आज ही.....! सारा पानी बह चलेगा ! सबसे पहिले महँगू का ही खेत बूड़ेगा ।.....(*मूँछों पर ताव देता हुआ*) देखूँगा कि तब कौन मँझले ठाकुर उसे दवाई देते हैं ?

दलजीत : (*कुछ डरता हुआ सा*) अगर कहीं महँगू ने देख लिया तो बाबा...

पुजारी : (*हाथ की हँसुली दलजीत को देते हुए*) यह ले, रख ले। तेरी गिरिस्थी में काम आएगी।......धरम का काम है। दलजीत भगत घबड़ाओ नहीं। कवच दे ही दिया है। कोई फिकिर की बात नहीं है।......जा चला जा. फड़ुवा उठा ले ... कटाव आज अभी करके तब बड़े ठाकुर की हवेली में जाना !......

दलजीत : (*हँसुली पाकर खुश होता हुआ*) ठीक है ! बाबा...... अभी ये काम हो जायगा। अब आप फिकिर न करें। महँगू का सारा खेत चौपट न कर दिया तो आप कहिएगा कि दलजीत भी अपने बाप का बच्चा था !

पुजारी : (*हँसकर*) और वह दवावाला बक्सा लाना भी न भूलना।. ...उसे भी टोंस मइया के हवाले करना है।.. तभी वह शांत होंगी !

दलजीत : फावड़ा किधर है पुजारी बाबा ?

पुजारी : (*संकेत देता हुआ*) उधर है कोने में ..शायद उधर होगा...आम के नीचे ...

दलजीत : बाबा पूरा विश्वास रक्खें।...... जो कुछ बड़हर बाबा का हुकुम होगा. दलजीत पूरा करके दिखाएगा !

बाबा : भगत ! तुमसे तो हम बराबर यही उम्मीद करते हैं !.....महँगू को अब की ऐसा सबक मिलना चाहिये कि वह आकर यहाँ नाक रगड़े ! तभी हमारा काम सिद्ध होगा !

दलजोत : (*हँसकर*) बाबा ! सब कल सुबह देखिएगा..... (*जाता है*)

बाबा : (*मूँछों पर ताव देकर*) अब देखना है !! . किधर जाते हो बच्चा ? तुमने मेरे पेट पर लात मारनी चाही थी ! मैं तुम्हारी कमर पर ऐसी लात मारूँगा कि फिर कभी उठने का नाम भी न लोगे !

(*स्टेज पर का दिया बुझ जाता है । परदा धीरे-धीरे गिरता है ।*)

चौथा दृश्य

[पर्दा खुलता है। चौथा दृश्य ठाकुर सोमनाथसिंह की हवेली का एक भाग। ठाकुर सोमनाथ एक छोटे से तख्त पर बैठे हुए हैं। तख्त के ऊपर एक रंगीन चादर है। उस पर एक मसनद लगी हुई है। ठाकुर साहब उसी मसनद का सहारा लिए हुए हुक्का पी रहे हैं। दो-चार आदमी पास बैठे हुए हैं। एक तो है धनीराम और दूसरी ओर बैठे हैं रामगोपाल। धनीराम देखने में अधेड़ उम्र के, अधपकी मूंछें, सिर पर छोटा सा साफा और कुर्ता और अधटंगी धोती पहिने हैं। रामगोपाल जवान आदमी। रंगीन चारखाने का कुर्ता और एक लुंगी लगाये हैं।

ठाकुर : *(हुक्का का धुआँ छोड़ते हुए)* तो रामगोपाल क्या तै किया ? वह पारवाली जमीन क्यों नहीं बेच डालते ?

रामगोपाल : बड़े ठाकुर ! बाप-दादा की जमीन है सो बेचते नहीं बनता !

धनीराम : अरे ठाकुर भइया। अब तो सुनते हैं कि चकबंदी चलने-वाली है ! अभी से भइया रामगोपाल तुम्हें अपनी सब

जमीन चक में कर लेना चाहिए। आगे-पीछे पता नहीं कैसी जमीन मिले ?

(रहीमू मियाँ का प्रवेश। रहीमू मियाँ की उम्र लगभग साठ बरस की। दुबला-पतला शरीर, पकी-पकी छोटी सी दाढ़ी, चारखाने की एक लुंगी और एक बनियाइन पहने हुए हैं।)

रहीमू : *(पुकारते हुए)* बड़े ठाकुर ! बड़े ठाकुर !...

ठाकुर : *(कुछ उठकर बैठते हुए)* क्या बात है रहीमू मियाँ ? कैसे निकले ?

रहीमू : *(घबड़ाया सा)* बड़े ठाकुर ! मंझले ठाकुर कहाँ हैं ? राधे-किशुन भइया ? ठाकुर ! गरीबे तो अब नहीं बचेगा !... *(रोना सा हो जाता हैं।)*

ठाकुर : *(सहानुभूति प्रकट करते हुए)* क्यों क्या हुआ रहीमू मियाँ ? अभी दस दिन हुए तो तुम्हारे लड़के को देखा था ! क्या हो गया उसे ?

रहीमू : अल्लाह की मरजी कहो ठाकुर और क्या कहूँ ? दस दिन से ही उसे जूड़ी-बुखार ने धर लिया है। वो तेज बुखार चढ़ता है कि बस न पूछो। हाड़-हाड़ काँपने लगता है। मँझले ठाकुर से उसी की भीख माँगने आया हूँ। महँगू कहता था कि मँझले भइया के पास कोई बड़ी फकीरी दवा है।...वही हमें भी दे देते तो...।

(घबड़ाया हुआ अयोध्यानाथ आता है। मोटा तगड़ा नवयुवक। धोती पहने है। बनियाइन पर अँगौछा डाले हुए हैं।)

अयोध्या : *(जल्दी के साथ)* बड़े ठाकुर ! राम-राम...मँझले ठाकुर भइया कहाँ हैं...?

ठाकुर : क्या हुआ अयोध्या ?

अयोध्या : *(रोवासा होकर)* ठाकुर, माँ,ऽऽऽऽऽ।...माँ.....को चार दिन से .....।

ठाकुर : बुखार चढ़ा है। है ना ? *(पुकारकर)* मँझले ठाकुर !... ओ भइया...राधाकिशुन...राधाकिशुन...।

(नेपथ्य से 'आता हूँ' का स्वर सुनाई पड़ता है।)

ठाकुर : बैठो रहीमू ...बैठो अयोध्या...!! आजकल तो कहो कि बड़े भाग से मंझले ठाकुर यहाँ हैं तो बहुतों का रोग-दोख कट गया ! मगर...रहीमू...अयोध्या ! तुमने बाबा से बिनती चिरौरी नहीं की क्या ?

रहीमू : अरे ठाकुर *(साँस खींचकर)* सहीद साहब की कबर पर सिन्नी औ चादर सब चढ़ा चुका मगर बुखार उतरने का नाम नहीं लेता ! लड़का अब बोल भी नहीं पाता...।

राधाकिशुन : *(प्रवेश कर कुछ घबड़ाए स्वरों में)* बड़े भइया...! बड़े भइया ! हमारा तो रात में सब सामान चोरी चला गया...!! कुछ भी नहीं छोड़ा चोरों ने...!!

ठाकुर : (*चौंककर जैसे जलता हुआ लोहा छू गया हो*) अरे...! चोरी...? मेरे घर में . ? क्या कहते हो राधाकिशुन...? (*सब लोग चौंक पड़ते हैं।*)

राधाकिशुन : हाँ बड़े भइया ! मेरा कपड़ा लत्ता, मनी बेग, सब उठा ले गये। खैर मुझे उस सबका कुछ अफसोस नहीं है। मगर मेरा दवावाला बक्स भी उठा ले गये...। मेरे तो हाथ-पाँव काट दिए ?

रहीमू : (*चीखकर*) अरे तो मँझले ठाकुर ! दवा नहीं मिलेगी ?

अयोध्या : हाय राम !! (*माथा पकड़ लेता है।*)

रहीमू : किशनू भइया ! हमारा गरीबे ।तो खतम हो जायगा...। (*दौड़कर राधाकिशुन के पाँव पकड़ लेता है।*) भइया, किसी तरह से उसकी जान सलामत रक्खो। तुम्हारा एहसान जिन्दगी भर न भूलूँगा !!

(*ठाकुर उठकर क्रोध में टहलने लगते हैं।*)

राधाकिशुन : घबड़ाओ नहीं रहीमू काका ! मैं कहीं से कुछ जरूर इंतिजाम करूँगा। मरने नहीं दूँगा गरीबू को !

रहीमू : (*पाँव पकड़े हुए*) भइया, जब तक उसे नहीं बचाओगे, तब तक मैं तुम्हारा सहारा छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा ! मेरा तो वही अकेला है !!

अयोध्या : राधाकिशुन दादा ! हमारी माँ की... ?

राधाकिशुन : उसकी दवा का भी कुछ इन्तिजाम होगा ही ! घबड़ाओ नहीं।...पहिला काम तो मैं यह समझता हूँ कि सारे गाँव में खबर कर देना कि जो भी मेरा सामान उठा ले गये हैं वे ले जायँ। मुझे उनका कुछ नहीं करना है ! मगर हमारा दवा का बक्स वे गल्ती से उठा ले गये हैं। उसका वे कोई भी इस्तेमाल न कर पायेंगे। उसे वे चाहें तो कहीं भी लाकर वापस धर जायँ ! आखिर गाँववालों को मारने में ही उन्हें क्या फायदा होगा...? मैं उन्हें कुछ नहीं...

बड़े ठाकुर : (*सहसा तड़ककर*) क्या कहते हो मँझले ठाकुर ! मैं सालों की खाल खिंचवा लूँगा ! आखिर तुम मेरे मेहमान हो तो गाँव भर के मेहमान हो ! मेहमान का सामान चोरी करनेवालों की खाल ही खिंचवानी होगी !!... (*गाली देता हुआ*) हरामजादे, बेईमान, जो सब की भलाई करे उसी की जड़ काटने पर आमादा हैं।...

राधाकिशुन : बड़े भइया ! (*समझाते हुए*) अब बेकार गुस्सा करने से क्या होगा ? जिसने भी यह काम किया है, उसने तो अपनी नासमझी में ही किया है। अब उसकी नासमझी पर खुद नासमझी दिखाने से क्या फायदा होगा ? (*बैठकर एक कागज पर कुछ लिखता है।*) अगर

केवल इस परचे को कोई शहर के डाक्टर रघुनाथ की दूकान पर ले जाय तो दवा आ जाय।

रहीमू : (*सँभल कर*) हाँ बेटा ठीक कहते हो !

बड़े ठाकुर : (*तैश में*) मगर देखो तो ! रहीमू मियाँ। आखिर तुम तो समझ रहे हो कि नहीं ?...मेहमान के साथ इन गाँववालों ने क्या किया है ?

रहीमू : खुदा समझेगा उन्हें बड़े ठाकुर ! इस वक्त गुस्सा करने से काम नहीं बनेगा !

(दूर पर कई आवाजें—मँझले ठाकुर ! बड़े ठाकुर ! मँझले ठाकुर.....बड़े ठाकुर'.....।)

बड़े ठाकुर : मालूम पड़ता है कि चोर पकड़ गये !

राधाकिशुन : नहीं ! यह तो सामने से महँगू चला आ रहा है। छन्नू महराज भी है। और भी कई लोग हैं..... क्या बात है ?

(महँगू छन्नू महराज और कई किसान आते हैं।)

महँगू : मँझले ठाकुर.....मँझले ठाकुर.....(*रोकर*) हमारा तो सत्यानास हो गया ठाकुर.....हमारे खेत पर पानी चढ़ता चला आ रहा है।...सारी फसल पानी में चली गई !

छन्नू : बड़े ठाकुर ! टोंस महरानी बड़ी तेजी से बढ़ रही हैं। कुछ इंतिजाम करना चाहिये नाहीं तो बड़ी मुस्किल पड़ेगी ! सकल गाँव बूँड़ जाए !!

धनीराम : अब तो बड़ा कठिन भवा !!

रहीमू : (*घबड़ाकर*) अरे भइया ! सबसे पहिले तो मेरा ही घर जायगा । या अल्लाह क्या मरजी है तेरी!

रामगोपाल : हमारा घर भी गया ही समझो ठाकुर !

महँगू : (*रोते हुए*) मेहरिया बिटिया सब के जान बचब कठिन है बड़े सरकार !!

ठाकुर : अरे महँगू, रहीमू, छन्नू पंडित, तुम सब लोग अपने घर-वालों को लाकर भाई, हमारे घर में टिका दो ! यहाँ पानी नहीं चढ़ता । ऊँचा है न !!

राधाकिशुन : रामगोपाल, महँगू, अयोध्या ! तुम सब लोग जवान आदमी होकर रोते हो !! तुम अपनी जान बचा नहीं सकते ? अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकते हो ?

बड़े ठाकुर : बाबा का कोप है ! पगलुवा ने अब की गाँव पर मुसीबत खड़ी कर दी ! वे ही कोई उपाय बता सकते हैं ।

रहीमू : कहीं का न रक्खा उस बेहूदे ने ! (*क्रोध से काँपता है ।*) (*सहसा दलजीत का, भीगे कपड़े पहिने, कीचड़ में सने हुए घबड़ाई हुई मुद्रा में, आँखें फाड़े प्रवेश ।*)

महँगू : क्या हुआ दलजीत ? (*सब उसकी ओर देखने लगते हैं ।*)

दलजीत : (*आँख फाड़े हुए एकदम शांत स्वरों में*) बड़हर बाबा डूब गये !

राधाकिशुन : डूब गये ?

कई स्वर : डूब गये ?...क्या हुआ ?

दलजीत : टोंस महरानी ने उन्हें निगल लिया !

ठाकुर : (*कुछ डाँट कर*) ठीक से बताओ दलजीत क्या हुआ ?...

दलजीत : (*घबड़ाकर*) ठाकुर-ठाकुर ! बाबा...नदी में कुछ डालने के लिए गये थे कि एकदम पानी बढ़ गया। पानी के जोर ने उन्हें ऐसा खींचा कि वह थम ही नहीं पाये !

ठाकुर : (*बिगड़कर*) तुम वहाँ खड़े क्या कर रहे थे ?...दौड़ के बचाते नहीं बना, नमकहराम ?

दलजीत : (*घबड़ाये स्वरों में*) ठाकुर ! सरकार !...हम तो मिलने गये थे महराज से। हमारे सामने ही वह नदी में पैठे ! बस टोंस महरानी की लीला, कि ऐसा बढ़ता हुआ पानी हमने नहीं देखा !...एकदम बाबा जी उसी में लोट गये।...फिर जो अन्दर गये तो पलट के ऊपर आते उन्हें नहीं देखा। हमने भीतर घुसकर बाबा को बहुत ढूँढ़ा। मगर नहीं मिले !

ठाकुर : (*माथा पकड़कर बैठ जाते हैं।*) एक बाबा का सहारा था, वह भी हाथ से जाता रहा ! पानी कितना बढ़ गया है दलजीत ?

दलजीत : पानी बहुत आगे आ गया है। अब टोंस मइया को रोकनेवाला कोई नहीं है बड़े ठाकुर !!

राधाकिशुन: है कैसे नहीं ? तुम कैसी बातें करते हो दलजीत ? आखिर इतना बड़ा पाँच-हाथ का तुम्हारा शरीर किस दिन काम आयेगा ?

दलजीत : हमारा शरीर जिस काम आये, आप बड़ी खुशी से ले सकते हैं भइया !

राधाकिशुन: तुमको इस मुसीबत का सामना करना होगा। चलो ! गाँव के सब बूढ़े जवान मिल जाओ। चाहो तो एक दिन में इतना बड़ा बाँध तैयार कर सकते हो कि टोंस सिर पटककर रह जाय तब भी तुम्हारे गाँव पर आँच नहीं आ सकती।

महेसरी : (*प्रवेश करके*) बाह मँझले ठाकुर। मगर इतना बड़ा बाँध बनाने के लिये पैसा कहाँ से आएगा ?

महँगू : हमारे तो हाथ-पाँव इसी पैसे के बिना बेकार हैं। हमारा .....।

ठाकुर : बात यह है मँझले ठाकुर, कि यह सब काम हम लोगों के बूते का नहीं है ! अब तो अपनी सरकार है ! कभी न कभी तो आखिर हमारी भी सुधि लेगी। तब तक तो सब्र करके बैठना ही पड़ेगा !

रहीमू : (*परेशानी के साथ हाथ उठाकर*) मगर बड़े ठाकुर ! हम तो तब तक तबाह हो जायेंगे !

रामगोपाल : (*कमर पर हाथ रखकर*) हमारा क्या फायदा होगा ? हम तो मिट चुके होंगे ।

धनीराम : भाई ! पैसे का ही तो सवाल है । यह तो ऐसी फटी धरती है कि जिसने पाँव धरा इधर, उसी को यह चटकर जायगी !!

राधाकिशुन : (*कुछ जोश में आकर*) आप लोग भूल रहे हैं धनीराम चाचा ! पैसा ही सब कुछ नहीं है ! आपकी मेहनत ही आपका पैसा है ! जितना परिश्रम आप करते हैं उतना ही पैसा कमाते हैं । फिर हम परिश्रम से ही पैसे की जरूरत क्यों नहीं मिटा सकते ?

महँगू : लेकिन भइया कैसे ?

राधाकिशुन : ऐसे कि तुम जैसे, हमारे जैसे, सभी नौजवान अभी जुट जायँ तो एक बार पहाड़ उखाड़ कर फेंक दें, नदी को मोड़ दें, आकाश को छू लें और समुद्र को बाँध दें । भइया । तुमने कभी अपने पुरपार्थ को समझा नहीं !

महेसरी : (*आगे बढ़कर*) हाँ भइया ! ठीक तो कहते हो । रामायन में जब तक हनुमान को जाम्बवन्त ने नहीं बताया कि तुममे इतनी सकती है कि तुम चाहो तो सात समुन्दर पार कर जाओ, तब-तक हनुमान के भीतर हिम्मत नहीं आई थी । महँगू , अयोध्या, रामगोपाल तुम सभी तो इस गाँव के हनुमान हो !!

रहीमू : *(दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए)* ठीक है ! महेसरी ठीक कह रहे हैं।

ठाकुर : नहीं रहीमू मियाँ ! बात यह है कि आखिर बिना सरकार के हम क्या कर सकेंगे ? हमारी सुनेगा कौन ?

राधाकिशुन : *(आवेश में)* सरकार...सरकार...सरकार...!! बड़े भइया ! सरकार कौन है। आप ही हैं कि नहीं ? फिर आप क्यों नहीं करते ? हम किसी सरकार की इंतिजार करते रहेंगे तो हमारा गाँव दूसरे दिन सूरज की रोशनी देखने के लिए भी नहीं बचेगा !—सरकार जो काम सात बरस में पूरा नहीं कर सकती वह काम आप लोग चाहें आपके मन में सच्ची भावना हो, तो अपने श्रम के बल पर आप सात घण्टे में पूरा कर सकते हैं !!

(महँगू, रामगोपाल, महेसरी, अयोध्या सब एक दूसरे का मुँह देखते हैं।)

धनीराम : मगर जवानी के जोस से काम नहीं चलता भइया। यह सब कैसे होगा ?

राधाकिशुन : जैसे सब काम होना है।...आप में और आपके गाँव में सचमुच जवानी का जोश होना चाहिए ! इतने बड़े देश में अगर हमारे गाँव जैसे सभी गाँव, सरकार के

सहारे बैठे रहे होते, तो जानते हो क्या होता ?—सब जगह यही जहालत होती, यही मुसीबत होती !!

ठाकुर : राधाकिशुन ! यह ठीक है कि गाँव में जितने घर बूड़ने-वाले हों उनका सामान मैं मँगवाए लाता हूँ। सब बच जायँगे। मगर बाढ़ को रोकना आसान काम नहीं है। पुराने जमाने में, सभी बादशाह लोग पुल और बाँध बनवाते थे ..।

दो एक स्वर : हाँ-हाँ ठाकुर साहब ठीक कहते हैं। अपने बूते का यह काम नहीं है !

दलजीत : (*निराश स्वर में*) अब क्या होगा ? अब कुछ नहीं हो सकता भइया !

राधाकिशुन : बड़े भइया...और आप सभी लोग सोच रहे हैं कि हम कोई नया काम करने जा रहे हैं ? ऐसा नहीं है मेरे भाई। जब-जब संकटकाल आया है, जब-जब बिपत्ति आई है, तब-तब हमारे लोगों ने अपनी सहायता, अपने आप की ! जानते हैं आप ? जब हठी समुद्र ने भगवान् राम को लङ्का पर चढ़ाई करने के लिए मार्ग देने से इन्कार कर दिया था तो क्या हुआ था ?

[सहसा पीछे का पर्दा एक जोर की आवाज़ के साथ हट जाता है। एक नया दृश्य दिखाई पड़ने लगता है। आगे के मंच का प्रकाश बहुत धीमा हो

जाता है पीछे के पर्दे के पास दोनों पखवाइयाँ में से जो रोशनी जा रही है उनपर नीले रंग का कपड़ा है। इस तरह भीतर के दृश्य में नीली रोशनी पड़ रही है। स्टेज के पीछे भी नीले परदे लगे हैं। भीतर के दृश्य मे दिखाई पड़ते हैं बनावटी वेश में भगवान् श्रीराम और श्री लक्ष्मण। बहुत से बन्दर और भालू बैठे हुए है सब उदास है। यह मेजिक लालटेन की स्लाइड से भी दिखाया जा सकता है।]

राधाकिशुनः भगवान् राम निराश होने लगे। विनती का कोई भी असर समुद्र पर नहीं हुआ। तब लक्ष्मण ने कहा हे प्रभो! आप सब कुछ जानते हैं। आपके सामने मैं कुछ भी कहूँ तो मेरा अपराध है! किन्तु फिर भी मैं कहना चाहता हूँ कि जड़ समुद्र बिना ताड़ना के नहीं राह पर आएगा! इसे इसका दण्ड मिलना चाहिये!

[पीछे के दृश्य में दिखाई पड़ता है कि राम अपने धनुष पर बाण चढ़ाते हैं। नीचे से एक सुन्दर पुरुष हाथ में थाल लिये हुए प्रकट होता है। थाल में नाना प्रकार के रंग के बिरंगे मोती और मणियाँ हैं।]

राधाकिशुनः *(पीछे के दृश्य के अभिनय के साथ साथ कहता जाता है)* श्रीराम ने जैसे ही बाण चढ़ाया तैसे ही समुद्र से

वरुण प्रकट हुए। उन्होंने श्रीराम को भेंट चढ़ाई और मार्ग देने का वचन दिया। *[पीछे के दृश्य में वरुण मूक अभिनय से थाल की भेंट श्रीराम के चरणों पर चढ़ाते हैं। श्रीराम उन्हें आशीर्वाद देते हैं। बन्दर भालू 'राजा रामचन्द्र की जै' के नारे लगाते हैं। वरुण उन्हें संकेत द्वारा मार्ग देने की और पार जाने की राह बताता है। उसके बाद वह फिर अन्तर्धान हो जाता है।]*

राधाकिशुन: और वहाँ, उन बानरों के पास कोई भी दूसरा साधन नहीं था। श्रीराम को अपना लक्ष्य प्राप्त करना था। सीता माता को वापस लौटाना था! समुद्र पर पुल बाँधने की योजना बनी। श्रीराम ने सभी बानरों से स्वयं पत्थर ला ला कर उस समुद्र में डालने को कहा! *[पीछे के दृश्य में श्रीराम बानरों से संकेत करते हैं। बानर 'जै-जै कार' करके चल पड़ते हैं। फिर वे पत्थर लेकर मंच पर आते हैं और उसे एक ओर मंच के नीचे दनादन फेंकने लगते हैं।]*

राधाकिशुन: *(कहानी की तरह कहता आता है।)* इस तरह धीरे-धीरे उन लोगों ने अपना पुल बना डाला। उसी का नाम सेतुबंध हुआ !!...सेतुबंध बनाकर सब बानर मारे आनंद के नाचने लगे!

[पीछे के दृश्य में सब बानर प्रसन्न होते हैं। 'राजा रामचन्द्र की जै' के नारे जोर से लगाते हैं। श्रीराम और लक्ष्मण मुस्कराते हैं। सहसा पीछे का पर्दा गिर जाता है। मंच पर आगे का प्रकाश फिर तेज हो जाता है।]

महँगू : (*उत्साह में भरकर*) बोल दे 'राजा राम चन्द्र की जै।'

(*सब उच्च स्वरों में दुहराते हैं।*)

राधाकिशुन : इसके बाद किस तरह से वे सभी बानर और उनके नेता श्रीराम अपने कार्य में सफल हुए, यह तो आप सभी जानते हैं।

ठाकुर : (*कुछ चकित होकर*) वाह बेटा राधाकिशुन! तुमने तो ऐसा बताया कि जैसे हम लोग अपनी आँखों के ही सामने सब कुछ देख रहे थे...!!

महँगू :
रामगोपाल :
अयोध्या :
आदि } हम सब तैयार हैं मँझले ठाकुर। आप कहें तो हम अपने प्राणों की बाजी लगा कर दिखा दें।

राधाकिशुन : हाँ अपने प्राणों की बाजी तो लगानी ही होगी। आखिर तभी तो सबके प्राण बचेंगे .. ! तो फिर...।

ठाकुर : तो चलो जवानों! आज मैं भी सबके साथ चलूँगा!

(*सहसा रामअधार का चीखते हुए प्रवेश।*)

(पृष्ठभूमि में चीख पुकार और शोरगुल सुनाई पड़ता है।)

रामअधार : ठाकुर ! बड़े ठाकुर ! गजब हो गया। गजब हो गया...!!

कई स्वर : क्या हुआ रामअधार ?

रामअधार : (*भरे गले से*) सरकार ! छोटे ठाकुर, कुँवर खेलने गये थे। अभी तक लौटकर नहीं आए !...कोई बताता है कि नदी की तरफ गये थे ..! सरकार। नदी तो एकदम अजगर की तरह मुँह फाड़े बढ़ी आ रही है। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय...?

ठाकुर : (*चिन्तत होकर*) कुँवर का पता नहीं है ? कहीं नदी में में तो नहीं...।

धनीराम : बड़े ठाकुर !...चलो हम लोग सब मिलकर कुँवर को ढूँढ़ें।

राधाकिशुन : हाँ बड़े भइया चलिए। (*कई स्वर 'हाँ-हाँ चलिए।'*)

ठाकुर : (*तत्काल बोलते हुए*) बड़ा मुश्किल है न जाने कहाँ गया होगा।

राधाकिशुन : घबड़ाइये मत भइया सारा गाँव जब ढूँढ़ेगा तब कहीं न कहीं, शीघ्र ही कुँवर मिल जाएँगे।

महँगू : (*सबके साथ*) चलो बड़े ठाकुर !

राधाकिशुन : तुम बोलो दलजीत ? चुप क्यों हो ?

(दलजीत रो पड़ता है।)

ठाकुर : क्यों रोते हो? आखिर बात क्या है बता तो सही। बाबा के मरने का दुख तो सभी को है।

धनीराम : धन्य हो ठाकुर !!

राधाकिशुन : तो जवानों! उठाओ अपने-अपने फड़वे, अपनी खुरपी, अपनी कुदाल, अपना बाँका, अपना बसुला, चलो उठाओ अपना हथियार! चलो कमर कसकर एक बार लगा तो दो अपनी ताकत। टोंस नदी की धारा तुम्हारे जोश की रवानी से मुड़ जाय तब तुम्हारी बात है !!

कई स्वर : चलो चलो।.....

(ठाकुर आगे-आगे बढ़ते हैं। किनारे से फड़वा उठा लाते हैं। टोकरी हाथ में लेकर बढ़ते हैं।)

ठाकुर : चलो !.....बढ़ो.....।

महँगू : बोलो ठाकुर सोमनाथ की जै.....।

(सब दुहराते हैं। दलजीत एक ओर चुपचाप खड़ा है। राधाकिशुन उसके पास जाकर उसे समझाता हुआ कहता है।)

राधाकिशुन : चलो दलजीत! तुम भी आगे बढ़ो।...तुम्हारे ही दम का सब खेल है! तुम्हारे जैसे जवानों से यह गाँव बनेगा दलजीत भगत!

(दलजीत भी चलता है। सब लोग चलने लगते हैं। रामअधार एक तरफ जाता है। शेष लोग दूसरी तरफ जाते हैं। परदा गिरता है।)

पाँचवाँ दृश्य

[*पीछे का परदा ऐसे उठा रहता है कि उसमें से सिर्फ बीच का भाग दिखाई पड़ता है। पीछे के परदे के भीतर इस बार पखवाइयो की रोशनी पर लाल कपड़ा डालकर रोशनी हल्के लाल रंग की कर दी गई है। इस पीछे के परदे के खुले हुए अंश में एक उठी हुई बड़ी दीवार सी दिखाई पड़ती है। पहले परदे और इस परदे के बीच की जगह में तमाम चीजों का ढेर लगा हुआ है फड़आ, टोकरियाँ, पाँचा, खुरपियाँ, बेलचे आदि। राधाकिशुन, ठाकुर, अयोध्या, महँगू, रामगोपाल और गाँव के बहुत से लोग भीगे कपड़े पहने हुए, कीचड़ में सने, तेजी से काम करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कोई खुरपा का बेंट बना रहा है। कोई टोकरी में मिट्टी चढ़ा रहा है। नदी के किनारे बाँध बनाने का काम हो रहा है। दृश्य में हर ओर पेड़ और झाड़ियाँ हैं। उसी समय आगे का परदा उठता है।*]

राधाकिशुनः (ललकारता हुआ) शाबास मेरे जवानों! तुमने तो अपनी जवानी की लाज रख ली है। अब थोड़ा सा हं

काम और है। अब न चूको।...आज इस जिद्दी नदी को पता चल जाना चाहिए कि जब तक तुम नहीं बोलते थे तभी तक यह अपनी मनमानी कर पाती थी!

(महँगू टोकरी में मिट्टी भरकर पीछे की ओर ले जाता है।)

ठाकुर : शाबास मेरे महँगू! गाँववाले सदा तेरा नाम याद रक्खेंगे! वाह मेरे शेर! तूने तो सचमुच रातोरात इतना बड़ा बाँध उठवा दिया।

(अयोध्या दूसरी टोकरी भरकर ले आता है और पीछे ले जाता है तब तक रामगोपाल भी ले आता है। महगू मिट्टी डाल कर वापस लौट आता है।)

राधाकिशुन: *(गद्गद् होकर)* मुझे बड़ी खुशी हो रही है बड़े भइया! मैं तो किसी लायक नहीं हूँ लेकिन मेरी बात मानकर इन गाँववालों ने, आपने, अपना भला भले ही किया हो लेकिन मुझे जितना सम्मान दिया है, वह मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ।

ठाकुर : राधाकिशुन! यह सब तुम्हारी ही तो वीरता है। तुम तो बेटा सचमुच राधाकिशुन की तरह इस गाँव का उद्धार करने आ पहुँचे! जिस तरह गोकुल पर जब इन्द्र ने कोप किया था तो कृष्ण भगवान् ने गोबर्धन पर्वत उठा कर

सब की रक्षा की थी, उसी तरह तुमने भी हमारी रक्षा की है !!

(लोग मिट्टी की टोकरियाँ लेकर आ जा रहे हैं।)

राधाकिशुन : लेकिन बड़े भइया ! आप यह भूल रहे हैं कि उस गोवर्धन पर्वत को ऊपर उठाए रहने के लिए गोकुल के सभी गोपों ने अपनी-अपनी लाठियाँ सहारे की तरह लगा दी थीं ! तभी उनकी रक्षा हुई थी !!

(रहीमू मियाँ का लड़खड़ाते हुए मिट्टी की टोकरी लादे हुए धीरे-धीरे प्रवेश।)

राधाकिशुन : अरे ! अरे ! रहीमू काका ! यह क्या ? अरे इस उमर में मिट्टी नहीं लादी जाती। *(लपककर टोकरी लेता हुआ)* लाओ मुझे दे दो। मैं डाल दूँगा !

रहीमू : नहीं बेटा। आखिर इस गाँव में मेरा भी हक है। मैं भी तो इसी जमीन का एक बेटा हूँ। आखिर मुझे भी तो कुछ जिम्मेदारी निभाने दे। मैं भी अपनी मिट्टी इस बाँध में जरूर डालूँगा ! *(टोकरी नहीं देता है।)*

ठाकुर : *(बढ़कर)* लाओ रहीमू ! मैं तुम्हारी मिट्टी डाल दूँगा।...चलो मेरे साथ आओ तुम भी ? *(ठाकुर रहीमू मियाँ को लेकर भीतर के परदे में चले जाते हैं। महेसरी दलजीत को लिए हुए एक तरफ से प्रवेश करता है।)*

महेसरी : मँझले ठाकुर ! देखो तो इस पागल को। सब तो काम

में लगे हुए हैं और यह दलजीत उस महुवा के नीचे बैठा बैठा सुबुकी भर रहा है।

(दलजीत फिर रोने लगता है।)

राधाकिशुन: क्या बात है दलजीत ?...*(पास आकर सहानुभूति के साथ)* क्या बात है दलजीत ?

दलजीत : *(रोकर)* मँझले ठाकुर। हमें माफ कर दो ! हम बड़े खराब हैं !

राधाकिशुन: *(कुछ चक्कर में पड़कर)* क्या बात हो गई दलजीत ! आदमी कभी खराब नहीं होता ! वह अपनी खराबी छोड़ दे तो वही अच्छा आदमी हो जाता है। तुम भी अच्छे आदमी हो !

दलजीत : *(रोकर पैर पर गिर पड़ता है।)* भइया ! मैंने पुजारी के कहने पर तुम्हारा दवा का बक्सा चुरा कर पुजारी को नदी में फेंकने के लिए दिया था। उसी में पुजारी बाबा डूब गये। मैंने ही भइया यह बंधी काटी थी। सो भी पुजारी बाबा के कहने पर। मैं नहीं जानता था कि सारा गाँव बूड़ जायगा !! *(रोता है।)*

राधाकिशुन: *(सोचते हुए)* हूँ !!

महेसरी : *(आश्चर्य से)* अच्छा ?...*(क्रोध में)* बड़ा खराब काम किया तूने दलजीत ! न जाने कितने आदमियों की हत्या का पाप तेरे सिर लगेगा ! राम राम !! नालायक !

चुल्लू भर पानी में डूब मर ! सारे गाँव को सत्यानास कर डाला। अभी सब को पता चल जाय तो सब तेरी हड्डी-पसली चबा जायँ .

राधाकिशुन: नहीं महेसरी दादा ! इस बात को किसी से कहने का काम नहीं। दलजीत को इतनी समझ जब आ गई कि यह अपना कसूर, अपनी खराबी समझ गया तो फिर इसे दण्ड देने की जरूरत नहीं। लेकिन भइया दलजीत, तुमने यह क्यों नहीं सोचा कि दूसरों के बहकावे में आकर तुम अपने ही लोगों का अहित कर रहे हो ?

दलजीत : मँझले ठाकुर ! हमारी आँख पर पाप का परदा चढ़ा हुआ था। (*रोता है*)

राधाकिशुन: अच्छा जाने दो दलजीत। अब तो तुम्हारी आँखों से वह परदा हट गया है। अब तुम अपना सही रास्ता समझ लो। जिसमें सब की भलाई हो, उसी में तुम्हारी भलाई भी शामिल है !! गाँव का हित, देश का हित, तुम्हारा भी हित है। जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ। चलो तुम भी काम में लग जाओ। एक तरह से तुमने सब का फ़ायदा करा दिया है। न तुमने यह किया होता और न आज लोग इस तरह से मेहनत करके यह बाँध बनाते। महेसरी दादा। इसे भी काम पर लगा लो।

महेसरी : (*बाँह पकड़कर उठाता हुआ*) चलो उठो दलजीत।

मँझले ठाकुर ने तुम्हें क्षमा कर दिया ! अब चित से लगाकर इस काम में हम सब का हाथ बँटाओ। उठो ! भूल जाओ पुरानी बात !!

(दलजीत उठकर खड़ा होता है।)

राधाकिशुन : *(एक टोकरी देता हुआ।)* लो भइया ! नदी का पानी मोड़ना दलजीत तुम्हारी ही ताकत में है। चलो मेरे जवान !!.....तुम अच्छे आदमी हो ! अच्छाई करके दिखाओ !!

(दलजीत खुश होकर टोकरी उठा लेता है और फावड़ा लेकर चला जाता है। महेसरी भी पीछे-पीछे जाता है। ठाकुर, धनीराम और रहीमू मियाँ पीछे के परदे से बाहर निकलकर आते हैं।)

राधाकिशुन : बड़े भइया। देखा ! अब कितना काम बाकी रह गया है ?

धनीराम : बस भइया ! लगभग सब पूरा ही हो गया है। रहीमू मियाँ की टोकरी पड़ने भर की देर थी ! इधर का पानी का बहाव तो बिलकुल ही रुक गया है।

रहीमू : *(रुककर बोलते हुए)* मेरा क्या ?...सब बड़े ठाकुर की मेहनत है। अपने हाथों सैकड़ों टोकरी मिट्टी डाली है। इन्हीं के सहारे सारा गाँव सहारा देने को खड़ा हो गया !!

अयोध्या : *(पीछे के परदे के बाहर आकर उत्साह में)* भइया,

अब तो सारा काम पूरा हुआ समझो। नदी से दस हाथ ऊपर हम लोगों ने बाँध बना दिया है। पानी वहाँ तक कभी नहीं पहुँच सकता !

राधाकिशुन : शाबाश अयोध्या !...पूरा दिन पूरी रात काम करके तुम लोगों ने अपनी जवानी सार्थक कर दी !! (*ठाकुर से*) बड़े भइया देखिए यही है असली पैसा ! क्यों धनी, काका ? देखा ?

धनीराम : (*हँसकर*) हाँ भइया देख रहे हैं !

ठाकुर : यह सब राधाकिशुन की देन है। (*ठाकुर के मुख पर चिन्ता की भावना आ जाती है।*)

रहीमू : (*ठाकुर का मुख देखकर*) कुँअर का कुछ पता नहीं चला ! अभी तक रामअधार का भी पता नहीं ! ठाकुर दादा ! तुम अब घर जाओ। सब काम पूरा हो जायगा !

ठाकुर : नहीं रहीमू मियाँ जब तक यह काम पूरा न.....।

(*रामअधार का दूर से चिल्लाते हुए आना 'बड़े ठाकुर !! सरकार !!'*)

राधाकिशुन : (*चौंककर*) अधरवा आ रहा है'.. (*रामअधार आ जाता है।*)

रामअधार : (*चिल्लाकर खुशी से हाँफता हुआ*) ठाकुर ! बड़े ठाकुर !! कुँवर मिल गये !! कुँवर भइया मिल गये !!

(हाँफता हुआ) कुँवर पैर फिसल जाने से नदी में गिर गये थे। मगर कालू मछुवा ने उन्हें तैरकर बचा लिया। सब भगवान् की किरपा है।...*(ठाकुर खुशी में उछलने लगते है।)*

ठाकुर : बोलो राजा रामचन्द्र की जै! *(सब दुहराते हैं।)*

राधाकिशुन : *(प्रसन्न होकर चिल्लाता है।)* आ जाओ। आ जाओ! सब लोग आ जाओ!!...आओ आओ...।

(सब तरफ से सभी लोग दौड़कर सामनेवाले मंच पर आ जाते है। इतने में महँगू भी आता है।)

महँगू : *(उत्साह से)* राधाकिशुन भइया!... नदी का पानी घट रहा है! अभी हमने देखा है! चार अँगुल नीचे घट गया है! घटता ही जा रहा है!!

रहीम् : वाह बेटे महँगू, शाबाश! तूने तो नदी से लड़ाई ठानकर उसे हरा दिया!! क्या कहने हैं तेरे

(महँगू की पीठ ठोकता है।)

राधाकिशुन : *(अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक)* भाइयो। तुम लोगों ने इतना पसीना बहाकर जो अपने गाँव के नये देवता—श्रम देवता की पूजा की है—मेहनत का बाँध बनाया है—उसी श्रमदेवता ने, प्रसन्न होकर हमें कई वरदान दिये हैं—हमारा खोया हुआ कुँवर हमें मिल गया, नदी की बाढ़ घट गई। पानी की धारा मुड़ गयी, फसलें फिर

से लहराएँगी, गीत फिर गूँजेंगे, गाँव सदा-सदा के लिये बच गया।... बोलो ऐसा देवता, तुम्हें और कहाँ मिलेगा ? पूजा करते ही जो तत्काल तुम्हें फल देता है। जिसको तुम अपनी आँखों के सामने ही देख रहे हो ! बोलो ऐसे—'श्रमदेवता की जै !'

(सब लोग जै-जैकार के नारे लगाते हैं।)

भाई, ऐसे श्रमदेवता की पूजा यदि हम करते रहें तो हमें बराबर अपने गाँव की सुख समृद्धि के रूप में उसका वरदान दिखाई पड़ता रहेगा। इसी श्रमदेवता के आवाहन से मेरे भाई, तुम सब अपने गाँव का पूरा नक्शा बदल सकते हो ! तुम्हारे पास बल है, जनशक्ति है, पौरुष है। तुम्हें किसी दूसरे का सहारा क्यों देखना पड़ेगा ? तुम क्यों किसी के आसरे बैठो ? कोई तुम्हारी सहायता करे तो सिर आँखों पर। मगर तुम किसी की सहायता के सहारे कैसे हाथ पर हाथ धरे बैठे रह सकते हो ?

ठाकुर : *(बीच में बोलते हुए)* यह सब कुछ जो हुआ है मँझले ठाकुर ने किया है। इसके लिये सारा गाँव मँझले ठाकुर का एहसानमंद है। उन्होंने हमें राम भगवान् का संदेश बताया। हमने क्या किया, हमने तो उन्हीं की सेना की तरह काम किया है। बोलो राजा रामचन्द्र की जै, बोलो मँझले ठाकुर की जै, भइया राधाकिशुन की जै !

(भीड़ दुहराती है)

महँगू : *(आगे बढ़कर)* मँझले ठाकुर जिन्दाबाद !!

(भीड़ जै जैकार दुहराती है)

राधाकिशुन : भाई। मैंने तो कुछ भी नहीं किया है। मेरी जै-जैकार लगाने से क्या लाभ...? मैंने तो एक रास्ता—जो मेरा आज़माया हुआ रास्ता था, तुम्हें बतलाया। यह मेरा सौभाग्य है कि आप सब ने मेरा कहना मान लिया !... और मैं क्या कहूँ ?.....आपने जो कुछ किया वह सब मेरे कहने पर किया, इसका मैं जीवन भर आभारी रहूँगा लेकिन दरअस्ल यह जीत तो आपके पसीने की है, आपके श्रम की है, आपकी मेहनत की है। आइये हम और आप दोनों ही उसी श्रमदेवता की जै-जैकार करें। जोर से बोलिये और एक बार श्रम के वरदान से आकाश और धरती को छू लीजिये—बोलिये :

श्रमदेवता की—

(भीड़ दुहराती है—जै !)

श्रमदेवता की—

(भीड़ दुहराती है—जै !)

श्रमदेवता की—

(भीड़ दुहराती है—जै !)

[परदा धीरे-धीरे गिरता है।]

———